Lecture-1

Topic-Role of language in Indian Politics

Degree-II (Hons.) Paper-3

Date-6-7-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

भारतीय राजनीति पर भाषा का प्रभाव :-
(Impact of Language on Indian Politics)

भारत विविधताओं वाला देश है जो जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति और आर्थिक दृष्टि से विभिन्न समूहों में विभाजित है। हर समूह के अपने हित और अपनी अलग-अलग समस्यायें हैं। इन परस्पर विरोधी हितों के बीच समन्वय स्थापित करना भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की सबसे गंभीर समस्या है।

भारतीय समाज के विभाजन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण भाषा है। हमारे देश में

सैकड़ो भाषाएँ बोली जाती हैं। एक ही भाषा के बोलने वाले लोग एक समूह में संगठित होकर अपनी भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्नशील हैं। भाषायी विभिन्नता समाज के विभिन्न भाषायी समूहों के बीच टकराव उत्पन्न करती है, विशेष रूप से मुस्लिम अल्पसंख्यकों की सबसे बड़ी शिकायत यह है कि भारत में उर्दू भाषा को उचित स्थान नहीं दिया गया है।

दूसरी तरफ हिन्दी समर्थकों के वर्ग के तरफ से शिकायत रही है कि सबसे अधिक संख्या बल होने के बावजूद उसे उचित स्थान नहीं किया जा रहा है। इस प्रकार हिन्दी-उर्दू विवाद हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक रूप से तनाव पैदा करता है। जिसका फायदा राजनेता अपनी वोट बैंक के रूप में जरूर उठाते हैं। एक तरफ कांग्रेस पार्टी मुस्लिमों के वोट को ध्रुवीकरण करने के लिए उर्दू भाषा की हिमायत करती है तो दूसरी

तरफ भाजपा हिन्दी भाषा को राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति से जोड़कर हिन्दू वोट को अपनी तरफ खींचने का प्रयास करती है।

दक्षिण भारत में भाषा के आधार पर हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा व अंग्रेजी को लेकर झगड़ा है। दक्षिण भारत के लोग न हिन्दी पढ़ना चाहते हैं और न सरकारी भाषा मानने के लिए तैयार हैं। वहां हिन्दी विरोधी आंदोलन बराबर होते रहते हैं। डीएमके नेता करूणानिधि ने 1967 में हिन्दी भाषा के विरोध के नाम पर ही चुनाव लड़ा और तमिलनाडु में सरकार बनायी।

शिवसेना पार्टी महाराष्ट्र में मराठा मानुष का नारा देकर तथा हिन्दी व दक्षिण भारत के भाषा के विरोध के नाम पर ही अपनाई राजनीति चमकाई। तमाम राज्य के सिविल सेवा परीक्षा में स्थानीय भाषी को तरजीह दी जाती है। इस प्रकार भाषायी आधार पर समाज का वैमनस्यपूर्ण विभाजन राष्ट्रीय एकता के लिए अत्यधिक घातक है।